

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण रविवार 25 अक्टूबर 2026 वर्ष-9,अंक-264 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com



www.facebook.com/krantisamay1



www.twitter.com/krantisamay1

सैन्यबलों के लिए बनेगा खास ब्रॉडबैंड नेटवर्क

देशभर के 30 लाख कर्मियों को मिलेगी सुविधा

गृह मंत्रालय का आदेश,डिजिटल की ओर पुलिस

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में पुलिस, अर्धसैनिक बलों और आपदा राहत से जुड़े कर्मियों के बीच संचार व्यवस्था को मजबूत करने की तैयारी है। केंद्रीय गृह मंत्रालय करीब 30 लाख कर्मियों के लिए देशव्यापी समर्पित ब्रॉडबैंड नेटवर्क विकसित करना चाहता है। इसके जरिए जरूरत के समय सुरक्षित और तेज संचार के साथ आवाज, वीडियो और डेटा साझा करने की सुविधा उपलब्ध कराने की योजना है। गृह मंत्रालय ने शुक्रवार को इस प्रस्तावित नेटवर्क के डिजाइन और तकनीकी ढांचे को लेकर आम लोगों और संबंधित पक्षों से सुझाव मांगे। इस पहल



का उद्देश्य पुलिस और अन्य आपातकालीन सेवाओं को ऐसा संचार तंत्र उपलब्ध कराना है, जो गंभीर परिस्थितियों में भी उनके काम आ सके।

सुरक्षा और आपदा राहत से जुड़े विभाग शामिल- गृह मंत्रालय के प्रस्तावित नेटवर्क का नाम ब्रॉडबैंड पब्लिक प्रोटेक्शन एंड डिजास्टर रिलीफ है। यह देशभर में सार्वजनिक सुरक्षा और आपदा राहत मिशन क्रिटिकल पुश-टू-टॉक मिशन क्रिटिकल डेटा और मिशन क्रिटिकल वीडियो जैसी सुविधाएं उपलब्ध होंगी।

30 लाख उपकरणों की जरूरत,तीनश्रेणियोंमें बांटने की योजना

गृह मंत्रालय के मुताबिक, इस परियोजना के लिए करीब 30 लाख हैंडसेट की जरूरत का अनुमान है। इन्हें कर्मियों की जिम्मेदारियों और कार्यस्थल की आवश्यकताओं के अनुसार अलग-अलग श्रेणियों में बांटने की योजना है। मंत्रालय के अनुसार, फील्ड में इस्तेमाल होने वाले उपकरणों को कठिन परिस्थितियों में काम करने के अनुकूल बनाया जाएगा। वरिष्ठ अधिकारियों के लिए स्मार्टफोन श्रेणी के उपकरण और अन्य जरूरतों के लिए स्थिर या वाहन में लगाए जाने वाले उपकरण प्रस्तावित हैं। बांडी-वॉर्न कैमरों यानी शरीर पर लगाए जाने वाले कैमरों की संख्या अभी तय नहीं की गई है। इस परियोजना के लिए गृह मंत्रालय को 8 14- 824 मेगाहर्ट्ज और 859- 869 मेगाहर्ट्ज बैंड में स्पेक्ट्रम का सैद्धांतिक आवंटन मिला है। ये फ्रीक्वेंसी सामान्य मोबाइल ब्रॉडबैंड के प्रचलित बैंड से अलग हैं। मंत्रालय ने इन फ्रीक्वेंसी पर काम करने वाले रेडियो उपकरणों और व्यावसायिक रूप से उपलब्ध डिवाइस की जानकारी भी मांगी है। इससे नेटवर्क के लिए जरूरी तकनीक की उपलब्धता और उसकी व्यावहारिक उपयोगिता का आंकलन होगा।

संक्षिप्त

समाचार

हरबूथ पर बढ़ाएं अपनी विचारधारा के वोट

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश में आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों को धार देते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पार्टी संगठन और विधायकों को बूथ स्तर पर मोर्चा संभालने के कड़े निर्देश दिए हैं। वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए प्रदेश भर के भाजपा विधायकों, प्रदेश प्रदाधिकारियों और जिलाध्यक्षों से संवाद करते हुए मुख्यमंत्री ने मतदाता सूची पुनरीक्षण अभियान को पूरी मुस्तेदी से चलाने का अल्टीमेटम दिया। सीएम ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग के विशेष सक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम के तहत हर पात्र मतदाता का नाम सूची में



शामिल कराना अनिवार्य है और इसमें किसी भी तरह की लापरवाही पार्टी को नुकसान पहुंचा सकती है। यदि ग्रामीण क्षेत्रों के मतदाताओं के नाम गांवों की सूची में दर्ज हैं और वे अब शहरी इलाकों में रह रहे हैं, तो उनके नाम शहर की मतदाता सूची में ट्रांसफर कराने के लिए अभियान चलाएं। सूत्रों के मुताबिक, मुख्यमंत्री ने जिलाध्यक्षों को सख्त लहजे में हिदायत देते हुए कहा कि विशेष सक्षिप्त पुनरीक्षण प्रक्रिया में केवल खानापूति या लीपापोती नहीं होनी चाहिए। हर पोलिंग बूथ पर पार्टी की विचारधारा से जुड़े समर्थकों को वोट बढ़ाना प्राथमिक कार्य है। विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया के दौरान जिन पात्र मतदाताओं के नाम गलती से कट गए थे।

केरलम राज्यपाल ने पद संभालते ही नॉनवेज रोका

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरलम के नए राज्यपाल ओम प्रकाश माथुर के पद संभालने के कुछ घंटे बाद ही लोकभवन में मांसाहारी खाना बनाने और परोसने पर रोक लगा दी। कां्रेस और विपक्षी सीपीएम ने इस फैसले की आलोचना की। कांग्रेस ने कहा कि क्या अब राज्यपाल तय करेंगे कि क्या खाना है। राज्यपाल कार्यालय के सूत्रों ने कहा कि माथुर शाकाहारी हैं। इसी वजह से उन्होंने यह बदलाव कराया। सूत्रों ने साफ किया कि लोकभवन के कर्मचारियों के खाने पर कोई रोक नहीं लगाई गई है। माथुर ने शुक्रवार सुबह केरलम के 29वें राज्यपाल के रूप में शपथ ली। केरल हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस सोमैन सेन ने उन्हें पद की शपथ



दिलाई थी। केरलम में 97ब लोग मांसाहारी हैं। देश में सबसे ज्यादा नॉन-वेज खाने वाले लोग तेलंगाना में हैं। लोकसभा सांसद केसी वेणुगोपाल ने कहा कि सिर्फ शाकाहारी खाना बनाने का निर्देश देकर राज्यपाल ने हट्ट पार कर दी है। उन्होंने कहा कि केरलम की खान-पान की संस्कृति अलग है। तटीय राज्य होने के कारण यहां मछली भी बड़ी मात्रा में उपलब्ध है। राज्य के लोग शाकाहारी या मांसाहारी भोजन चुनने के लिए स्वतंत्र हैं। सूत्रों के मुताबिक, लोकभवन की रसोई में तैयार खाना सिर्फ राज्यपाल और उनके निजी स्टाफ के कुछ सदस्यों को दिया जाता है। अन्य कर्मचारी या तो घर से खाना लाते हैं या बाहर खाना खाते हैं। उनके खाने की पसंद पर कोई रोक नहीं लगाई गई है।

इंडो-पैसिफिक क्षेत्रीय वार्ता की मेजबानी करेगी नौसेना

3 सितंबर से होगा संवाद,18 देशों के एक्सपर्ट होंगे शामिल

जलवायु

परिवर्तन-उभरती तकनीकों पर मिलकर करेंगे चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय नौसेना तीन से पांच नवंबर तक नई दिल्ली में इंडो-पैसिफिक रणनीतिक वार्ता की मेजबानी करेगी। इस दौरान कई देशों के विशेषज्ञ समुद्री विज्ञान, महासागरों के प्रबंधन और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने की क्षमता और उभरती प्रौद्योगिकियों पर विचार-विमर्श करेंगे। शुक्रवार को रक्षा मंत्रालय के अधिकारियों ने बताया कि इस कार्यक्रम के पहले दिन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का संबोधन होगा। मंत्रालय के अनुसार, इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में मंत्रिस्तरीय एवं अन्य विशेष संबोधनों के साथ हिंद-प्रशांत क्षेत्र के 18 देशों के समुद्री पेशेवरों, वैज्ञानिकों, शि्षाविदों, नीति निर्माताओं और विशेषज्ञों के योगदान भी शामिल होंगे। मंत्रालय ने कहा कि समाधान-उन्मुख संवाद पर आईपीआरडी



के विशेष ध्यान के मद्देनजर इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का विचार-विमर्श राष्ट्रीय, उप-क्षेत्रीय और व्यापक क्षेत्रीय स्तरों पर विशिष्ट एवं कार्रवाई योग्य उपायों की पहचान पर केंद्रित होगा।

इन उपायों को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सौहार्द, सहयोग और समन्वय को बढ़ावा देने वाली द्विपक्षीय, त्रिपक्षीय और बहुपक्षीय संरचनाओं के मौजूदा तंत्रों के माध्यम से लागू किया जा सकेगा। संयुक्त

अनुसंधान, सहयोग से प्रौद्योगिकी विकास, जिम्मेदार शासन, वैज्ञानिक आंकड़ों तक उचित पहुंच और संस्थागत साझेदारी को मजबूत करने के लिए ‘‘व्यावहारिक रास्तों’’ पर भी विचार किया जायेगा। हिंद-प्रशांत क्षेत्रीय संवाद (आईपीआरडी) 2026 ‘हिंद-प्रशांत क्षेत्र में विज्ञान, प्रौद्योगिकी और शैक्षणिक सहयोग’ विषय पर केंद्रित होगा।

कैबिनेट विस्तार से पहले पीएम करेंगे बैठक

सभी मंत्रालयों की सचिवों के साथ होगी यह मीटिंग

प्रधानमंत्री के पास पहुंचेगा मंत्रियों का रिपोर्ट कार्ड

नई दिल्ली (एजेंसी)। हाल ही में जब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राज्य और फिर केंद्र सरकार के मुखिया के रूप में 25 वर्ष पूरे किए तो जनविश्वास को इसका आधार बताने के साथ ही नई ऊर्जा से काम और रिफार्म एक्सप्रेस चलाने के प्रति भी देशवासियों को आश्वस्त किया। अब उसी दिशा में प्रयास तेज करने का केंद्र सरकार का इरादा दिखाई दे रहा है। दरअसल, 27 अक्टूबर को कैबिनेट सचिव ने सभी मंत्रालयों के सचिवों की बैठक बुलाई है। इसमें मंत्रालयों से उनकी परफार्मेंस रिपोर्ट ली जाएगी। वह समग्र रिपोर्ट प्रधानमंत्री तक जाएगी, जिसके बाद ईज आफ डूइंग और ईज आफ लिविंग बढ़ाने की दिशा में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय किए जा सकते हैं। एक मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि कैबिनेट सचिवालय से सभी मंत्रालयों से कहा गया है कि वर्तमान में चल रही योजनाओं,उनकी प्रगति, जनता को मिल रहे लाभ के साथ ही भविष्य के लिए प्रस्तावित कार्ययोजनाओं पर पूरी रिपोर्ट तैयार की जाए।



देश में अब डिजिटल क्रांति से बदलेगी खेती

तय समय से 5 महीने पहले बनी 11 करोड़ फार्मर आईडी

केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने जताई बेहद खुशी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मार्च 2027 तक 11 करोड़ किसानों की फार्मर आईडी बनाने का लक्ष्य रखा था लेकिन इसे पांच माह पहले हुए हासिल कर लिया गया है।

देश में 11 करोड़ किसानों की फार्मर आईडी बनने पर केंद्रीय मंत्री चौहान ने कहा है कि आज का दिन भारतीय खेती, कृषि और किसानों के लिए ऐतिहासिक है। एक सपना साकार हुआ है, एक संकल्प पूरा हुआ है।

किसानों को समृद्ध बनाने के लिए टेक्नोलॉजी जरूरी- उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का संकल्प है, विकसित भारत के लिए, विकसित कृषि और समृद्ध किसान और खेती को विकसित और किसान को समृद्ध बनाने के लिए, आधुनिक टेक्नोलॉजी जरूरी है। उन्होंने अपने कहा कि कई तरह की योजनाएं



प्रधानमंत्री के नेतृत्व में देशभर में किसानों के लिए चल रही हैं। उन योजनाओं का लाभ सही समय पर, सही किसान को मिले, यह भी जरूरी है। इसलिए डिजिटल कृषि मिशन बनाया गया और उस मिशन के अंतर्गत यह तय किया गया कि अब हर किसान की अलग पहचान होगी, फार्मर आईडी बनाई जाएगी।

भारत का मोस्ट वॉन्टेड गैंगस्टर हिमांशु भाऊ यूएसए से गिरफ्तार

30 से ज्यादा मामले दर्ज,2023 में इंटरपोल ने

रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया था

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के मोस्ट वॉन्टेड गैंगस्टर हिमांशु भाऊ को अमेरिका में एफबीआई ने गिरफ्तार किया है। हिमांशु पर दिल्ली, हरियाणा समेत कई राज्यों में मर्डर, हत्या की कोशिश, रोंदारी और हथियारों की तस्करी जैसे करीब 30 से ज्यादा गंभीर मामले दर्ज हैं। मीडिया रिपोर्ट्स में यह जानकारी सामने आई है। इंटरपोल ने उसके खिलाफ 2023 में रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया था। हरियाणा पुलिस ने उस पर 2.5 लाख और दिल्ली पुलिस ने 1 लाख रुपए का इनाम घोषित किया था। 2022 में हरियाणा में 24 घंटे में तीन हत्याओं के बाद हिमांशु चर्चा में आया था। हिमांशु भाऊ की गैंग ने ही 2025 में यूट्यूबर एल्विश यादव के गुरुग्राम स्थित घर के बाहर फायरिंग की जिम्मेदारी ली थी। हिमांशु की लॉरेस और गोल्डी बराड़ गैंग से दुश्मनी मानी जाती है। इसी मामले में एक अन्य भगोड़े नीरज फरीदपुरिया को भी पकड़ा गया। बताया गया है कि वह इस साल जमानत पर रिहा होने के बाद अपने टखने में लगा निगरानी ट्रैकर हटाकर बचा रहा।



कश्मीर में प्रतिबंधित संगठन से जुड़े छह लोग गिरफ्तार

इनमें चार महिलाएं शामिल

होटल में हुई सीक्रेट बैठकें

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के बांदीपोरा जिले में प्रतिबंधित संगठन इतेहाद-उल-मुस्लिमीन से जुड़ाव के आरोप में 6 लोगों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें 4 महिलाएं शामिल हैं। पुलिस को शक है कि इस नेटवर्क को सीमा पार से फंडिंग मिली थी। पुलिस के मुताबिक, बांदीपोरा



और आसपास के इलाकों में 14 से 15 सीक्रेट बैठकें हुई थीं। इनमें से 5 से 6 बैठकें बांदीपोरा-बामरमूला रोड पर स्थित एक छोटे होटल में किए जाने की बात सामने आई है। विचारकर्ताओं को एक साल से ज्यादा समय में करीब 7 से 8 लाख के सदिग्ध लेन-देन का पता चला है। मामले में यूएपीए की धारा 10 और 13 के तहत केस दर्ज किया गया है। पुलिस फंडिंग के स्रोत और नेटवर्क से जुड़े लोगों की भूमिका की जांच कर रही है।

पीएम मोदी द्वारा तय किए लक्ष्य का किया जिक्र- उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी ने लक्ष्य तय किया था कि मार्च 2027 तक 11 करोड़ फार्मर आईडी बन जाने चाहिए। लेकिन तय समय से 5 महीने पहले ही 11 करोड़ फार्मर आईडी बनाने का काम पूरा हो गया। केंद्रीय कृषि मंत्री चौहान ने बताया कि अब यह फार्मर आईडी के माध्यम से योजनाओं का पारदर्शी तरीके से लाभ मिलेगा। बैंक का ऋण हो, कोई कागज के पेट नहीं भरने पड़ेंगे, कि बार-बार यह कानून लाओ, वह काजज लाओ।

कलाकार हैं स्वप्नद्रष्टा और शांतिपूर्ण भविष्य के शिल्पी

(लेखक – ललित गर्ग)

अंतर्राष्ट्रीय कलाकार दिवस (25 अक्टूबर) पर विशेष)

कला एवं कलाकार मानव सभ्यता की आत्मा है। यह वह अनंत भाषा है, जिसके माध्यम से मनुष्य अपने अंतरतम की संवेदनाओं, अनुभूतियों, विचारों और स्वप्नों को रूप, रंग, ध्वनि, शब्द, लय और भावों में अभिव्यक्त करता है। जब आदिम मानव–कलाकारों ने गुफाओं की दीवारों पर अपनी अनुभूतियों को चित्रित किया होगा, जब किसी कलाकार ने पत्थर को तराशकर उसमें आकृति का सौंदर्य खोजा होगा अथवा किसी ने प्रकृति की ध्वनियों से प्रेरित होकर पहली बार सुरों को साधा होगा, तभी से कला ने मानव जीवन में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई होगी। कला की यात्रा वस्तुतः मानव चेतना के विकास, उसकी कल्पनाशीलता और उसकी संवेदनशीलता की यात्रा है। प्रत्येक वर्ष 25 अक्टूबर को मनाया जाने वाला अंतर्राष्ट्रीय कलाकार दिवस इसी सृजनशील चेतना को सम्मान देने तथा समाज और सभ्यता के निर्माण में कलाकारों के योगदान को पहचानने का अवसर है। लेकिन इस दिवस की सार्थकता केवल कलाकारों का अभिनंदन करने, चित्रकला प्रदर्शनों का आयोजन करने, संगीत समारोहों में भाग लेने अथवा कलाकृतियों की प्रशंसा करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए। आज जब विश्व युद्धों की आशंकाओं, आतंकवाद, हिंसा, धार्मिक एवं वैचारिक टकराव, आर्थिक प्रतिस्पर्धा और महाशक्तियों के वर्चस्ववादी संघर्षों से घिरा हुआ है, तब कला और कलाकार की भूमिका पहले से कहीं अधिक व्यापक और महत्वपूर्ण हो जाती है। प्रश्न यह है कि क्या मनुष्य की तकनीकी प्रगति, आर्थिक समृद्धि और सैन्य शक्ति उसे अधिक

शांतिप्रिय बना सकी है? यदि नहीं, तो निश्चित रूप से हमें उस मानवीय चेतना की ओर लौटना होगा, जो मनुष्य को केवल शक्तिशाली नहीं, बल्कि संवेदनशील, सहिष्णु और करुणाशील बनाती है। कला इसी चेतना का सबसे प्रभावशाली माध्यम है।

वर्तमान विश्व की विडंबना यह है कि एक ओर विज्ञान ने दूरियों को समाप्त कर दिया है, संचार के साधनों ने दुनिया को एक वैश्विक परिवार का स्वरूप दिया है और आर्थिक संबंधों ने राष्ट्रों को परस्पर निर्भर बनाया है; दूसरी ओर मनुष्यों के बीच अविश्वास, घृणा और संघर्ष की दीवारें भी ऊँची होती जा रही हैं। युद्धभूमियों में बिखरते परिवार, आतंकवाद की भेट चढ़ते निर्दोष जीवन, विस्थापन की पीड़ा झेलते बच्चे और वर्चस्व की राजनीति में कुचले जाते छोटे राष्ट्र इस प्रश्न को सामने रखते हैं कि विकास का वास्तविक अर्थ क्या है? क्या विकास केवल ऊँची इमारतों, आधुनिक हथियारों, विशाल बाजारों और कृत्रिम बुद्धिमता तक सीमित है, अथवा उसका वास्तविक उद्देश्य मनुष्य के जीवन को सुरक्षित, सुंदर, स्वतंत्र और आनंदमय बनाना भी है? कला और कलाकार इस प्रश्न का उत्तर मनुष्य के हृदय में खोजते हैं। वे याद दिलाते हैं कि सभ्यता की महानता विनाश की क्षमता से नहीं, बल्कि सृजन, संरक्षण और सह–अस्तित्व की योग्यता से मापी जानी चाहिए।

राजनीति और कूटनीति जहाँ कई बार हितों, सीमाओं और शक्ति–संतुलन के गणित में उलझ जाती हैं, वहीं कला और कलाकार मनुष्य के साझा दुख और साझा आनंद को सामने लाती है। एक चित्रकार युद्ध से उजड़े घर की तस्वीर बनाता है, तो उसमें किसी एक देश का नहीं, संपूर्ण मानवता का दर्द दिखाई देता है। एक संगीतकार जब करुणा से भरी धुन छेड़ता है, तो उसकी

भाषा समझने के लिए किसी अनुवाद की आवश्यकता नहीं होती। किसी कवि की पंक्तियों में व्यक्त प्रेम, किसी नर्तकी की भाव–भंगिमा में झलकती पीड़ा और किसी मूर्तिकार की रचना में उभरती मानवीय गरिमा भौगोलिक सीमाओं से परे जाकर हृदयों को जोड़ती है। यही कला की वह शक्ति है, जो शत्रुता के बीच संवाद, निराशा के बीच आशा और विभाजन के बीच आत्मीयता के पुल बना सकती है। कला और युद्ध के बीच का अंतर भी गहरे चिंतन का विषय है। युद्ध की मानसिकता दूसरे को पराजित करने में अपनी विजय खोजती है, जबकि कला दूसरे के अनुभव को समझने की दृष्टि प्रदान करती है। युद्ध सीमाओं पर दीवारें खड़ी करता है, कला उन दीवारों के पार झाँकना सिखाती है। हथियार शरीर को घायल करते हैं, किंतु घृणा मनुष्य की आत्मा को भी आहत करती है, कला उस आत्मा के घावों को भरने का प्रयास करती है। जहाँ हिंसा प्रतिशोध को जन्म देती है, वहीं सच्चा कलात्मक सृजन सहानुभूति और आत्ममंथन की प्रेरणा देता है। इसका अर्थ यह नहीं कि कला अकेले युद्ध रोक सकती है अथवा कलाकारों की अभिव्यक्ति मात्र से आतंकवाद समाप्त हो जाएगा। युद्धों को रोकने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति, न्यायपूर्ण नीतियाँ, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और प्रभावी संस्थाएँ आवश्यक हैं। लेकिन इन प्रयासों को स्थायी आधार देने के लिए ऐसी मानवीय चेतना चाहिए, जो हिंसा को गौरव और शांति को कमजोरी न समझे। कला इसी चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

भारत की सांस्कृतिक परंपरा में कला का संबंध केवल मनोरंजन से नहीं, बल्कि जीवन–दर्शन, आध्यात्मिकता और सामाजिक समरसता से भी रहा है। यहाँ संगीत साधना है, नृत्य भावों की अभिव्यक्ति है, साहित्य लोकमंगल की चेतना

है और लोककला समुदायों की स्मृति एवं पहचान का जीवंत दस्तावेज है। जैन दर्शन का अहिंसा और अनेकांत का संदेश भी हमें सिखाता है कि सत्य को समझने के लिए दृष्टियों की विविधता का सम्मान आवश्यक है। अनेकांत की भावना कला की प्रकृति से मेल खाती है, क्योंकि एक ही दृश्य, घटना अथवा अनुभूति को अलग–अलग कलाकार भिन्न दृष्टिकोणों से अभिव्यक्त कर सकते हैं। इन विविध अभिव्यक्तियों को स्थान देना संवाद, सहिष्णुता और सह–अस्तित्व को मजबूत करता है। इसके बावजूद आज कलाकारों के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। बाजार का दबाव कई बार कला को केवल लाभ और लोकप्रियता की कसौटी पर परखता है। त्वरित प्रसिद्धि की चाह, अभिव्यक्ति पर अनुचित प्रतिबंध, सांस्कृतिक असहिष्णुता और रचनात्मक स्वतंत्रता के प्रति संदेह कलाकार की संभावनाओं को सीमित कर सकते हैं। डिजिटल माध्यमों ने सृजन के अवसर बढ़ाए हैं, लेकिन सतही लोकप्रियता की प्रतिस्पर्धा ने गंभीर कलात्मक अभिव्यक्ति के सामने नई चुनौतियाँ भी खड़ी की हैं। कलाकार का सम्मान केवल पुरस्कार देकर या उसकी रचना की प्रशंसा करके पुरा नहीं होता; उसे स्वतंत्र अभिव्यक्ति, गरिमापूर्ण आजीविका, उचित पारिश्रमिक और सुरक्षित रचनात्मक वातावरण उपलब्ध कराना भी आवश्यक है। साथ ही कलाकारों का दायित्व है कि वे अपनी स्वतंत्रता का उपयोग समाज में घृणा फैलाने के बजाय विवेक, संवेदना और संवाद को प्रोत्साहित करने के लिए करें।

अंतर्राष्ट्रीय कलाकार दिवस हमें इस दिशा में सामूहिक संकल्प लेने का अवसर देता है। विशेष रूप से नई पीढ़ी को यह समझाना होगा कि सृजनशीलता का सर्वोच्च उपयोग केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं, बल्कि समाज को अधिक

न्यायपूर्ण, सुंदर और मानवीय बनाने में है। वास्तव में कला मनुष्य को यह विश्वास दिलाती है कि विनाश के अंधकार के बीच भी सृजन का दीप जलाया जा सकता है। वह हमें सिखाती है कि जीवन का सौंदर्य दूसरों को पराजित करने में नहीं, उनके साथ मिलकर जीने में है; मित्रता का, अर्थ केवल समान विचारों वालों से निकटता नहीं, बल्कि भिन्नताओं के बावजूद सम्मान बनाए रखना है; और शांति का अर्थ केवल युद्ध का अभाव नहीं, बल्कि न्याय, स्वतंत्रता, करुणा और परस्पर विश्वास की उपस्थिति भी है। कलाकार अपने रंगों, स्वरों, शब्दों, मुद्राओं और कल्पनाओं से ऐसे विश्व की तस्वीर रच सकते हैं, जिसमें मनुष्य की पहचान उसकी जाति, भाषा, धर्म या राष्ट्रीयता से पहले उसकी मानवीय गरिमा से हो।

अंतर्राष्ट्रीय कलाकार दिवस का वास्तविक संदेश यही है कि जहाँ हथियार भय पैदा करते हैं, वहाँ कला विश्वास जगाती है; जहाँ घृणा मनुष्यों को बाँटती है, वहाँ सृजन उन्हें जोड़ता है; और जहाँ युद्ध जीवन को उजाड़ते हैं, वहाँ कला जीवन को फिर से सुंदर बनाने का स्वप्न देती है। आज विश्व को केवल शक्तिशाली सेनाओं, समृद्ध अर्थव्यवस्थाओं और आधुनिक तकनीकों की ही आवश्यकता नहीं, बल्कि ऐसे संवेदनशील कलाकार हृदयों की भी आवश्यकता है, जो शांति को जीवन का आदर्श बना सकें। कलाकार मानवता के ऐसे ही स्वप्नद्रष्टा और भविष्य के शिल्पी हैं। उनके सृजन को सम्मान देना वस्तुतः मनुष्यता के उज्ज्वल भविष्य का सम्मान करना है। जब कला जीवन का उत्सव बनेगी, संवेदना सामाजिक संस्कार बनेगी और सह–अस्तित्व वैश्विक जीवन–दृष्टि बनेगा, तभी पृथ्वी युद्धों की आशंकाओं से मुक्त होकर शांति, मैत्री, अहिंसा और सौंदर्य की साझा धरती बन सकेगी।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

संपादकीय

अरुणाचल पर चीन की कुदृष्टि

ब्रिक्स समेत कई अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर लगातार मैत्री की बात करने वाले चीन द्वारा एलएसी पर तनाव पैदा करने की खबरें चिंता बढ़ाने वाली हैं। अरुणाचल बॉर्डर पर भारत व चीन के आमने–सामने होने की खबरों के सामने आने के बाद इस मुद्दे पर सियासत भी तेज हो गई है। दरअसल, भारत–तिब्बत सीमा पुलिस के महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने गुरुवार को एक कार्यक्रम में कहा कि पिछले कुछ समय से अरुणाचल प्रदेश में आईटीबीपी के जवान व पीएलए के सैनिक आमने–सामने आए हैं। यह स्थिति बदली नहीं है। उनके इस बयान के बाद कांग्रेस व विपक्ष ने केंद्र सरकार को घेरना शुरू कर दिया है। विपक्ष द्वारा इस मुद्दे को लेकर सरकार की चुप्पी पर सवाल उठाये जा रहे हैं। कहा जा रहा है कि इस वर्ष जुलाई में उत्तर–पूर्वी सीमा पर तनाव शुरू होने के उपरांत पहली बार आधिकारिक रूप से इसकी पुष्टि हुई है। बताते हैं कि अरुणाचल प्रदेश में सुबनसिरी जिले के असाफिला और माजा इलाके में यह तनाव बना हुआ है। वहीं सीमा पर तनाव के खुलासे और विपक्षी हमलों के बाद विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता द्वारा कहा गया है कि वास्तविक नियंत्रण रेखा से जुड़े विवादों को सुलझाने के लिये दोनों देश लगातार प्रयासरत हैं। दोनों पक्ष महसूस करते हैं कि भारत–चीन के बेहतर रिश्ते सीमा की शांति पर ही निर्भर करते हैं। बहरहाल, अरुणाचल को भारतीय संप्रभु हिस्से के रूप में अंतर्राष्ट्रीय मान्यता के बावजूद उसे दक्षिण तिब्बत कहना चीन के नापाक इरादों को ही दर्शाता है। वहीं आईटीबीपी के हालिया खुलासे में इस बात का भी जिक्र हुआ कि जुलाई से अब तक दोनों देशों के बीच तीन उच्चस्तरीय बैठकें हुई हैं, लेकिन तनाव पूरी तरह खत्म नहीं हुआ है। जबकि इस दौरान ब्रिक्स सम्मेलन में भाग लेने के लिये चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत भी आ चुके हैं। यही वजह है कि कांग्रेस आरोप लगा रही है कि जुलाई से सीमा पर तनाव होने की खबरों को देश से छिपाया गया है। निरसंबद्ध, भारत व चीन के बीच साझे दूतीन हजार किलोमीटर लंबी सीमा से जुड़े विवादों को लेकर देश चिंतित रहा है। भारतीयों के दिलों में 1962 के चीनी हमले के जख्म अभी भरे नहीं हैं। ‘ मुंह में राम और बगल में छुरी ’ की चीन की नीति पर भरोसा करना संभव भी नहीं है। हाल के वर्षों में गलवान का छल देशवासियों को याद है, जब हमने अपने बीस वीर जवानों को खोया था। वहीं भारत तिब्बत सीमा पुलिस के डीजी शत्रुजीत कपूर ने वार्षिक हिमवीर सम्मान समारोह के दौरान कहा था कि अरुणाचल सीमा पर तनाव के दौरान आईटीबीपी के कमांडो मुरतेद रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारी नई गठित शीर्ष कमांडो टीमों ने इस दौरान महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राजस्थान के अलवर स्थित सेंट्रल ट्रेनिंग कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में कपूर ने चीन की उन्नत सैन्य तकनीकों के मुकाबले के लिये आधुनिक हथियारों की जरूरत भी बताया। उन्होंने स्वीकार किया कि पारंपरिक हथियारों व तरीकों से चीन का मुकाबला करना मुश्किल होगा। चीन ने बुनियादी ढांचे और हथियारों के आधुनिकीकरण में भारी निवेश किया है। आईटीबीपी के डीजी ने आधुनिक युद्धों के तौर –तरीकों में आ रहे बदलावों का जिक्र करते हुए कहा कि आज झोन जैसी तकनीक से छोटे देश भी बड़े देशों का मुकाबला कर रहे हैं। उन्होंने ईरान द्वारा अमेरिका का मुकाबला करने तथा यूक्रेन द्वारा रूस को पहुंचाये जा रहे बड़े नुकसान का जिक्र किया। उन्होंने बताया कि आईटीबीपी के आधुनिकीकरण के लिये चार हजार करोड़ का बजट बनाया गया है। जिसमें से एक हजार करोड़ रुपये झोन शक्ति बढ़ाने पर खर्च किए जाएंगे। जिसमें एंटी झोन सिस्टम मजबूत करना भी शामिल हैं।

(लेखक – विश्वास कैलाश सारंग)

सनातन संस्कृति में मनुष्य की महानता का आधार उसकी शारीरिक संरचना नहीं बल्कि उसके गुण, कर्म और आत्मबल को माना गया है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने संदेश दिया है कि– ५ऊदरेदाल्मनात्मानं नाल्मानमवसादयेत्कम् अर्थात् मनुष्य को अपने प्रयास और पुरुषार्थ से अपना उत्थान करना चाहिए और स्वयं को कभी भी निराशा में नहीं डूबने देना चाहिए। भारतीय पैरा खिलाड़ियों का जीवन इसी शाश्वत संदेश का सजीव उदाहरण है, जहाँ चुनौतियाँ बाधा नहीं बल्कि अपनी क्षमता सिद्ध करने का अवसर बन जाती हैं। प्रकृति ने हर व्यक्ति को एक समान शारीरिक क्षमताएँ नहीं दी हैं। किसी के जीवन में जन्मजात शारीरिक चुनौतियाँ हैं, तो किसी को दुर्घटना या बीमारी के कारण कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। लेकिन इन परिस्थितियों के बावजूद जब कोई व्यक्ति अपने भीतर के साहस को पहचानता है, निरंतर साधना करता है और अपनी कमजोरियों को अपनी शक्ति में बदलने का संकल्प लेता है, तो उसकी उपलब्धि केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं रह जाती बल्कि वह समूचे समाज और राष्ट्र के लिए प्रेरणा बन जाती है।

इसी प्रेरणादायी भावना को भारतीय पैरा खिलाड़ियों ने जापान के आइबी–नागोया में आयोजित एशियन गैम्स–2026 में अपने शानदार प्रदर्शन से वैश्विक पहचान दी है। भारत के पैरा खिलाड़ियों ने कुल 114 पदक जिसमें 30 स्वर्ण, 35 रजत और 49 कांस्य जीतकर अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया और पदक तालिका में देश को शीर्ष चार में स्थान हासिल करने का गौरव दिलाया है। इन खिलाड़ियों ने दुनिया को बताया है कि दिव्यांगता किसी व्यक्ति की पहचान का संपूर्ण परिचय नहीं है और न ही उसकी संभावनाओं का अंतिम निर्धारण होता है। उनकी पहचान उनका परिश्रम, उनका अनुशासन, उनका साहस और अपने देश के लिए कुछ असाधारण कर गुजरने का उनका संकल्प है। वे केवल खेल के मैदान में प्रतिद्वंद्वियों को चुनौती नहीं देते बल्कि समाज में व्याप्त उन धारणों को भी चुनौती देते हैं, जो किसी व्यक्ति की क्षमताओं का आकलन उसकी शारीरिक सीमाओं के आधार पर करती हैं। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी

जी ने दिव्यांगजनों के प्रति समाज की सोच में सकारात्मक परिवर्तन लाने और उनके सामर्थ्य को नई पहचान दिलाने की दिशा में कई सार्थक प्रयास किए हैं। उन्होंने ‘विकलांग’ के स्थान पर ‘दिव्यांग’ शब्द का प्रयोग कर यह संदेश दिया कि किसी व्यक्ति की पहचान उसकी शारीरिक सीमाओं से नहीं बल्कि उसकी अंतर्निहित क्षमताओं, प्रतिभा और संकल्प से होनी चाहिए। यह पहल केवल शब्द परिवर्तन नहीं बल्कि सम्मान, संवेदनशीलता और समावेशी सोच को प्रोत्साहित करने का एक सार्थक प्रयास रहा है।

प्रधानमंत्री जी ने खेलों को राष्ट्रीय विकास और युवा सशक्तीकरण का महत्वपूर्ण माध्यम बनाने हुए खिलाड़ियों को बेहतर अवसर उपलब्ध कराने पर विशेष जोर दिया है। उनके नेतृत्व में खेलो इंडिया और टारगेट ओलंपिक पॉडियम योजना (अहंछ्क) जैसी पहलों के माध्यम से प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान, प्रशिक्षण और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं की तैयारी को प्रोत्साहित किया जा रहा है। पैरा खिलाड़ियों के लिए भी समान अवसर, आधुनिक प्रशिक्षण सुविधाएँ, उपयुक्त खेल उपकरण और आवश्यक सहयोग उपलब्ध कराना खेल व्यवस्था को अधिक समावेशी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण है। सरकार के प्रयासों, प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन, परिवारों के सहयोग और खिलाड़ियों के अथक परिश्रम के संमन्वय से भारतीय पैरा खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं।

एशियन पैरा गेम्स 2026 में भारत ने 30 स्वर्ण, 35 रजत और 49 कांस्य पदकों के साथ कुल 114 पदक अपने नाम किए। यह प्रदर्शन भारतीय पैरा खेलों में बढ़ती प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता और खिलाड़ियों के निरंतर प्रयासों का परिचायक है। इस उपलब्धि का सबसे उल्लेखनीय पहलू विभिन्न खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का प्रभावशाली प्रदर्शन रहा है। पैरा एथलेटिक्स से भारत की पदक तालिका में सबसे बड़ा योगदान दिया है। खिलाड़ियों ने दौड़, जंप, जैवलिन थ्रो, डिस्कस थ्रो और क्लब थ्रो जैसी स्पर्धाओं में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। वहीं पैरा शूटिंग, पैरा आर्चरी, पैरा बैडमिंटन, पैरा पारालिंपिज्म और पैरा जूडो में भी भारतीय खिलाड़ियों ने देश को गौरवान्वित किया है। भारत के पदक अभियान की शुरुआत महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल स्टैंडिंग रा11 स्पर्धा में शानदार प्रदर्शन के साथ हुई। जिसमें मोना अग्रवाल ने स्वर्ण पदक जीता, जबकि

अविन लेखरा ने रजत पदक अपने नाम किया। एक ही स्पर्धा में पहले और दूसरे स्थान पर भारतीय खिलाड़ियों का कब्जा देश की बेटियों की प्रतिभा, एकाग्रता और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता का प्रमाण है।

निशानेबाजी ऐसा खेल है, जिसमें एकाग्रता, धैर्य, मानसिक संतुलन और तकनीकी दक्षता की निर्णायक भूमिका होती है। मोना अग्रवाल और अविन लेखरा ने अपने प्रदर्शन से दिखाया कि दृढ़ संकल्प और अनुशासित अभ्यास के बल पर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उकृष्टता हासिल की जा सकती है। मोना अग्रवाल ने आगे भी अपनी सफलता का सिलसिला जारी रखते हुए 50 मीटर राइफल थ्री पोजीशन स्पर्धा में स्वर्ण पदक हासिल किया। इस प्रकार उन्होंने प्रतियोगिता में दो स्वर्ण पदक अपने नाम किए। उनकी उपलब्धि निरंतरता, आत्मविश्वास और उकृष्ट प्रदर्शन का प्रेक्ष उदाहरण है।

भारत की ऐतिहासिक सफलता में पैरा एथलेटिक्स का योगदान सबसे अधिक रहा है। इस स्पर्धा में भारतीय खिलाड़ियों ने कुल 65 पदक जीते, जिनमें 22 स्वर्ण पदक शामिल थे। यह प्रदर्शन बताता है कि भारतीय पैरा एथलेटिक्स में प्रतिभा, प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धा का स्तर लगातार आगे बढ़ रहा है। दो बार के पैरालंपिक चैंपियन सुमित अतिल ने पुरुषों की जैवलिन थ्रो स्पर्धा में अपना खिताब बरकरार रखते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया और उनकी सफलता के साथ महेंद्र गुर्जर ने रजत और संदीप संजय सरार ने कांस्य पदक हासिल किया। इस प्रकार भारतीय खिलाड़ियों ने इस स्पर्धा में तीनों पदक अपने नाम कर ऐतिहासिक क्लीन स्वीप की रिकॉर्ड भी बनाया है। एक ही स्पर्धा में तीनों पदकों पर भारत का कब्जा खिलाड़ियों की व्यक्तिगत प्रतिभा के साथ–साथ भारतीय पैरा एथलेटिक्स की व्यापक क्षमता का प्रमाण है। सुमित अतिल की निरंतरता, महेंद्र गुर्जर का उकृष्ट प्रदर्शन और संदीप संजय सरार की उपलब्धि युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा है।

वहीं प्रणव सूरमा ने डिस्कस थ्रो और क्लब थ्रो में स्वर्ण पदक जीतकर अपनी बहुमुखी प्रतिभा का परिचय दिया है। सिमरन ने महिलाओं की ३12 श्रेणी में 100 मीटर और 200 मीटर की दौड़ में स्वर्ण पदक हासिल किए। दिलीप महादू गावित ने 100 मीटर और 400 मीटर की ३47 स्पर्धाओं में जीत दर्ज की, जबकि निषाद कुमार ने लॉंग जंप और हाई जंप में स्वर्ण पदक अपने नाम किए हैं।

ईश्वर की कृपा बुद्धि से ही प्राप्त होती है

योग में आसन, प्राणायाम, मुद्रा और आहार–विहार आदि पर

तो बहुत शोध हुए हैं, अब ध्यान और मुद्रा की बारी है। इस विधा के अनुसार शांत मस्तिष्क ऊर्जा का केंद्र है तो निर्मल मन शांति और स्थिरता का। शास्त्रों में इन केंद्रों की उपमा ब्रह्मलोक और क्षीर सागर से दी गई है। मस्तिष्क या खोपड़ी में जहां दिमाग माना जाता है वहां एक केंद्र की कल्पना की गई है। इस केंद्र को ब्रह्मकेंद्र कहते हैं। ब्रह्मरंध अर्थात् मस्तिष्क का मध्यविन्दु। ब्रह्माण्ड के मध्य में ब्रह्मलोक माना गया है और ब्रह्मरंध मस्तिष्क में है। जीत और ब्रह्म के बीच अति महत्वपूर्ण आदान–प्रदान का माध्यम यही है।

पृथ्वी भी मनुष्य की तरह अंतग्रही आदान प्रदान से समृद्ध होती रहती है। उससे सूक्ष्म आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन जुटते रहते हैं। इस आदान–प्रदान का केंद्र द्वार ध्रुव है। ठीक इसी प्रकार मस्तिष्क का मध्य केन्द्र ब्रह्मरंध सहस्रार कमल है। यह जितना सशक्त या दुर्बल होता है उसी अनुपात में जीवन को ब्रह्मसत्ता के अनुदान पाने की सम्भावना बढ़ती है। अन्तर्जगत के इस ब्रह्मलोक की अनूप वर्षा का लाभ लेने के लिए खेचरी मुख का साधन बताया गया है। ध्यान मुद्रा में शान्त चित्त का साधन बताया गया है। ध्यान मुद्रा में शान्त चित्त से बैठकर जीभ के अगले भाग को तालू मूर्धा से लगाया जाता है। सहलाने जैसे मन्द–मन्द स्पन्दन पैदा किये जाते हैं। उस उतेजना से सहस्र दल कमल की प्रसुप्त स्थिति जागृति में बदलती है। यह खेचरी मुख है। इस स्तर पर अनुभव होने वाले उपादानों का वैज्ञानिक विश्लेषण अभी बाकी है। अध्यात्मविदों के अनुसार यदि भावना और क्रिया का सही समन्वय करके इस साधना को किया जा सके तो चेतना क्षेत्र में आनन्द और कार्य क्षेत्र में उल्लास की उपलब्धि होती है।

प्रकार मस्तिष्क का मध्य केन्द्र ब्रह्मरंध सहस्रार कमल है। यह जितना सशक्त या दुर्बल होता है उसी अनुपात में जीवन को ब्रह्मसत्ता के अनुदान पाने की सम्भावना बढ़ती है। अन्तर्जगत के इस ब्रह्मलोक की अनूप वर्षा का लाभ लेने के लिए खेचरी मुख का साधन बताया गया है। ध्यान मुद्रा में शान्त चित्त का साधन बताया गया है। ध्यान मुद्रा में शान्त चित्त से बैठकर जीभ के अगले भाग को तालू मूर्धा से लगाया जाता है। सहलाने जैसे मन्द–मन्द स्पन्दन पैदा किये जाते हैं। उस उतेजना से सहस्र दल कमल की प्रसुप्त स्थिति जागृति में बदलती है। यह खेचरी मुख है। इस स्तर पर अनुभव होने वाले उपादानों का वैज्ञानिक विश्लेषण अभी बाकी है। अध्यात्मविदों के अनुसार यदि भावना और क्रिया का सही समन्वय करके इस साधना को किया जा सके तो चेतना क्षेत्र में आनन्द और कार्य क्षेत्र में उल्लास की उपलब्धि होती है।

चीन सीमा की सुरक्षा करने वाले जवान दिल्ली में प्रदर्शन रोकने तैनात!

विचार मंथन

(लेखक – सनत जैन)

भारत की सीमाओं की सुरक्षा करने वाले जवानों को यदि राजधानी दिल्ली में नागरिकों के प्रदर्शन रोकने के लिए तैनात करना पड़े, तो यह केवल कानून–व्यवस्था का मामला नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा की प्राथमिकताओं का गंभीर सवाल खड़ा करता है। चीन के साथ सीमा पर तनाव समाप्त होने के दावों के बीच भारत–तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) के महानिदेशक शत्रुजीत कपूर ने अरुणाचल प्रदेश में कई स्थानों पर भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच जारी टकराव की पुष्टि की है। ऐसे समय में सीमा सुरक्षा बलों की तैनाती और उनके उपयोग पर देश में बहस होना स्वाभाविक है। कांग्रेस ने इस मामले में आक्रामक रुख अपनाया हुआ है। गलवान घाटी में जून 2020 में 20 भारतीय सैनिकों की शहादत के बाद, भारत–चीन के संबंधों में विश्वास का संकट गहरा गया था। अक्टूबर 2024 में दोनों देशों के बीच देपसांग और डेंचोचोक में शरत की व्यवस्था को लेकर समझौता हुआ। इसका अर्थ यह नहीं

था, सीमा विवाद हमेशा के लिए समाप्त हो गया। अब आईटीबीपी प्रमुख के बयान ने स्पष्ट कर दिया है, अरुणाचल प्रदेश सहित भारत की सभी सीमाओं पर चीन द्वारा जो अवैध कब्जा किया जा रहा है उसकी वास्तविक चुनौतियाँ पहले की तुलना में और भी गंभीर हुई हैं। सवाल यह है कि जब सीमा पर चीनी सैनिकों के साथ टकराव की स्थिति बनी हुई है, सरकार देश को पूरी स्थिति से अवगत क्यों नहीं करती? सीमा पर कहां टकराव हो रहा है, भारतीय जवान किन परिस्थितियों में काम कर रहे हैं। उन्हें आधुनिक तकनीक तथा आवश्यक उपकरणों की पर्याप्त उपलब्धता के लिए सरकार द्वारा क्या प्रयास किए जा रहे हैं, इन सवालों पर पारदर्शिता के साथ देश की जनता और विपक्ष को जवाब मिलना ही चाहिए। राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर हर जानकारी सारजनिक करना संभव नहीं है, लेकिन देश की जनता को गोपनीय मामलों को छोड़कर अन्य मामलों में अंधेरे में रखना भी ठीक नहीं है।

दिल्ली में प्रदर्शनों की आशंका के बीच केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों की 273 कंपनियों की तैनाती 31 अक्टूबर

तक बढ़ाए जाने की खबर सामने आई है। इनमें आईटीबीपी की 39 कंपनियां भी शामिल हैं। यह तैनाती ऐसे समय हो रही है, जब राजधानी में चुनाव आयोग के खिलाफ एवं विभिन्न मांगों को लेकर दिल्ली में छत्रों के प्रदर्शन और विभिन्न संगठनों की विरोधात्मक गतिविधियाँ जारी हैं। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने सीआरपीएफ, बीएसएफ, एसएफबी और अन्य केंद्रीय बल दिल्ली और पश्चिम बंगाल में बढ़ी संख्या में तैनात किए हैं। यह कहना सही नहीं होगा, पूरी तैनाती सीमा से जवानों को हटाकर की गई है, लेकिन सवाल यह है, जब सीमा में सैनिकों की जरूरत है ऐसे समय पर नागरिक क्षेत्र में उनकी तैनाती क्यों की गई? यह प्रश्न महत्वपूर्ण है, लंबे समय तक आतंरिक कानून–व्यवस्था की जिम्मेदारी निभाने से सीमावर्ती क्षेत्रों में बलों की उपलब्धता पर कितना भारी असर पड़ रहा है। लोकतंत्र में शांतिपूर्ण प्रदर्शन नागरिकों का अधिकार है। यदि कोई आंदोलन कानून का उल्लंघन करता है, तो उससे निपटने के लिए कानूनसम्मत व्यवस्था बनाने के लिए और भी बल मौजूद हैं। सरकार की आलोचना करने वाले प्रत्येक

आंदोलन को सुरक्षा की समस्या मानकर उससे निपटने की प्रवृति लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए उचित नहीं है। सरकार की यह स्पष्ट करना चाहिए कि राजधानी में इतनी बड़ी संख्या में केंद्रीय बलों की तैनाती की आवश्यकता क्यों पड़ रही है। देश के सामने पाकिस्तान, चीन, बांग्लादेश, नेपाल और म्यांमार से जुड़ी अलग–अलग सीमा बड़ी चुनौतियाँ हैं। आतंकवाद, घुसपैठ, तस्करी और सीमा पार अपराधों से निपटने के लिए प्रशिक्षित जवानों की जरूरत है। ऐसे में यदि केंद्रीय बलों को लगातार चुनावों और राज्यों की कानून–व्यवस्था के लिए तैनात किया जाता है, तो उनके मूल दायित्वों पर पड़ने वाले प्रभाव का आंकलन होना चाहिए। कानून व्यवस्था बनाए रखना सरकार की जवाब देही है।

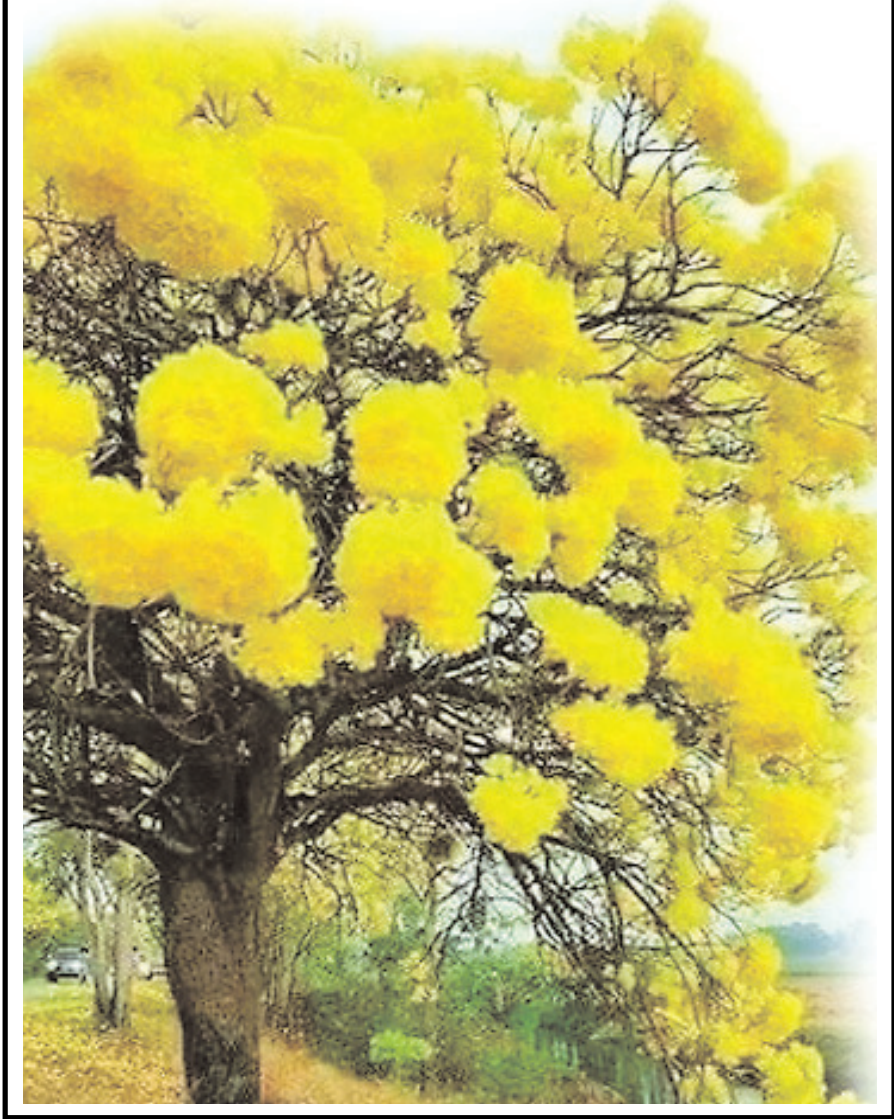
राहुल गांधी और कांग्रेस सहित विपक्षी दल सीमा की स्थिति को लेकर सरकार से पिछले कई वर्षों से संसद के अंदर सवाल पूछ रहे हैं। सरकार को इन सवालों का जवाब राजनीतिक आरोप–प्रत्यारोप से नहीं, तथ्यों और आधिकारिक जानकारी के माध्यम से देना चाहिए। विपक्ष

का काम सवाल उठाना और सरकार का दायित्व सदन में जवाब देना है। मतदाता सूची में नामों के विलोपन, चुनाव आयोग की निष्पक्षता और संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता को लेकर उठ रहे सवालों ने राजनीतिक वातावरण को तनावपूर्ण बना दिया है। ऐसे समय में सरकार और विपक्ष के बीच संवाद की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। सरकार के लिए भारत की सीमाओं की सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। देश की सुरक्षा करने वाले जवानों का इस्तेमाल कहां और किस उद्देश्य से किया जा रहा है, इसका जवाबदेह आकलन भी उतना ही आवश्यक है। सरकार को सीमा पर जारी टकराव की स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए, जवानों की आधुनिक संसाधन उपलब्ध कराने चाहिए और शांतिपूर्ण आंदोलनों से निपटने में लोकतांत्रिक मर्यादों का पालन करना चाहिए। सरकार को संवाद की परंपरा वातू करनी चाहिए। सरकार एक तरफा निर्णय लेती है। जो सवाल उठ रहे हैं उनका जवाब नहीं देती है। संवैधानिक संस्थाओं में बैठे हुए लोग भी मनमानी कर रहे हैं।



पौधे को कैसे होता है पुष्पित होने का एहसास

वैज्ञानिकों ने अंततः 80 साल पुरानी एक पहेली को हल करने का दावा किया है कि पौधों को यह बात कैसे पता चलती है कि उन्हें कब पुष्पित होना है। वैज्ञानिकों के मुताबिक यह उनके जीन्स में होता है। वाशिंगटन विश्वविद्यालय के एक दल के अनुसार फूल खिलने की प्रक्रिया किसी पौधे के पुष्पित पल्लवित होने के लिए महत्वपूर्ण होती है और इसके उचित समय का पता लगाने में आणविक घटनाक्रमों का सिलसिला होता है। जिसमें पौधे की जैविक घड़ी और धूप शामिल है। दल का नेतृत्व करने वाले प्रोफेसर ताकातो इमाइजुमी ने कहा कि अरबीडोप्सिस नामक अध्ययन में यह समक्षने का प्रयास किया गया कि किसी सामान्य पौधे में फूलों के खिलने का काम कैसे होता है। इससे यह समक्षने में बेहतरी होगी कि धान, गेहूँ और जौ जैसी फसलों के तौर पर उगे और जटिल पौधों में ये ही जीन्स किस तरह काम करते हैं। उन्होंने कहा, यदि हम फूल उगने के समय को नियमित कर सकते हैं तो इसे बढ़ाकर या इसमें देरी कर उपज बढ़ाने में सक्षम हो सकते हैं। प्रणाली को समझने से हमें इसमें बदलाव की सहजता होती है। साल में विशेष समयों पर पौधों के पुष्पित होते समय उनकी पत्तियों में फ्लोवरिंग लोकस टी नामक प्रोटीन बनता है जो इस प्रक्रिया को प्रेरित करता है। यह प्रोटीन पत्तियों से शूट एपेक्स में पहुंचता है जो पौधे का वह हिस्सा है जहां कोशिकाएं एक जैसी होती हैं। इसका मतलब है कि ये कोशिकाएं पत्तियां या फूल बन सकती हैं। इस शूट एपेक्स में प्रोटीन में आणविक बदलाव होते हैं जो कोशिकाओं को फूल बनने की दिशा में बढ़ाते हैं।



कितने तरह की स्केटिंग

रोलर स्केटिंग, आइस स्केटिंग, इन लेन स्केटिंग। रोलर स्केटिंग का भारत में बहुत चलन है। इसे सीखना आसान है।

स्केटिंग करो फिट रहो

स्केटिंग उतनी ही आसान और सुरक्षित है जितना कि दूसरे गेम खेलना, जैसे साइकिल चलाना, बास्केटबॉल या अन्य गेम खेलना। आजकल बहुत से स्कूलों में स्केटिंग सिखाई जाती है।

स्केटिंग केवल मनोरंजन का ही साधन नहीं है, बल्कि तुम इसे अपना कैरियर भी बना सकते हो। स्केटिंग के भारत में बहुत से प्रशिक्षण केंद्र हैं, जो बच्चों को चुनकर उन्हें दूसरे देशों में कैम्पियनशिप के लिए भेजते हैं। लेकिन ये सब बातें करने से पहले यह जानो कि स्केटिंग के क्या फायदे हैं – स्केटिंग एक ऐसी व्यायाम की मशीन है, जिसको करने से तुमको मजा भी आता है और चुस्त और स्वस्थ रहते हो। पैरों की ताकत बढ़ती है। शरीर की सभी मांसल को एक्सरसाइज हो जाती है। रीढ़ की हड्डी भी सही रहती है। हाथों और पैरों का सामंजस्य बनाए रखने में मदद मिलती है। दिमाग और समझने की क्षमता बढ़ती है। चौकन्ना रहकर सीखते हो।

स्केटिंग करना भागना और साइकिल चलाने से अधिक फायदेमंद है। तुमको सब बच्चों से मिलने का और बात करने का मौका मिलता है और नई जानकारी मिलती है।

क्या तुम्हें पता है कि हम इनसानों की तरह ही पेड़-पौधे भी आपस में बातें करते हैं! वो हमारी बात समझ सकते हैं। पेड़-पौधों को म्यूजिक सुनना भी पसंद है। वैज्ञानिक शोध में भी यह बात सामने आई है कि पेड़, फूलों के माध्यम से बातचीत करते हैं। पेड़ों के कम्युनिकेशन से जुड़ी कुछ मजेदार बातें

हमने भारत के महान वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बोस का नाम सुना है न। उन्होंने ही सबसे पहले यह बात बताई थी कि पौधे यानी प्लांट भी संवेदनशील होते हैं और जब कोई उन्हें प्यार करता है, तो वे महसूस करते हैं। उन्हें भी अच्छा संगीत प्रभावित करता है। और पता है? पौधे न सिर्फ किसी चीज को महसूस करते हैं, बल्कि अपनी बात कहते हैं। लेकिन बोल कर नहीं, कुछ दूसरे तरीकों से। वे हमारी तरह ही एक्टिव रहते हैं। वे खतरे को भांप कर अपनी रक्षा के उपाय भी करते हैं। अपने साथी पौधों को इसकी सूचना भी देते हैं। ये कोई कल्पना भर नहीं है, बल्कि इसे लेकर कई रिसर्च हुए हैं और उनसे ये बातें पता चली हैं। आज हम तुम्हें पौधों के बारे में कुछ ऐसी ही दिलचस्प बातें बता रहे हैं।

अपनी रक्षा के लिए आवाज लगाते हैं पौधे

फूल-पौधे कई बार अपनी सुगंध के जरिये अपनी रक्षा के लिए मदद मांगते हैं। जब कोई कीट पत्तियों, डालियों, फूलों को खा रहा होता है, तो अपनी महक के जरिये पौधे अपने मददगार इन्सेक्ट को आकर्षित करते हैं। ये इन्सेक्ट महक से आकर्षित होकर पौधे के पास आते हैं और उसे नुकसान पहुंचाने वाले कीटों (पेस्ट्स) को खा जाते हैं। जैसे कि तंबाकू का पौधा अपने सलाइवा की मदद से हॉर्नवर्म के केंटरपिलर को पहचान लेता है और फिर एक केमिकल सिग्नल छोड़ता है, जो केंटरपिलर के दुश्मन को आकर्षित करता है। फिर कुछ ही घंटों में केंटरपिलर का दुश्मन इन्सेक्ट यानी कीट पौधे के पास आ जाता है और उसे केंटरपिलर से छुटकारा दिला देता है।

खतरे को देख अपनी सुरक्षा बढ़ा देते हैं पौधे

पता है, पौधे अपने आसपास के पौधों के केमिकल सिग्नल्स को समझ सकते हैं और कई बार दूसरे पौधों पर कोई खतरा मंडराता है, तब उस सिग्नल को देख अपनी सुरक्षा को बढ़ा देते हैं, क्योंकि उन्हें पता चल जाता

है कि कोई भूखा इन्सेक्ट आसपास ही है। करीब पांच-छह साल पहले 48 स्टडी का विश्लेषण किया गया था, जिनमें यह बात पता चली कि पौधे अपनी सुरक्षा बढ़ा देते हैं, जब उनके आसपास के पौधों को नुकसान पहुंचता है। जैसे कि जब सेजब्रश को हॉर्नवर्म नुकसान पहुंचाता है, तो वह अपनी सुरक्षा में ट्रिप्सीन प्रोटीनेज इन्हिबिटर्स (टीपीआईजे) प्रोटीन रिलीज करता है। टीपीआईजे इन्सेक्ट को प्रोटीन डाइजेस्ट करने से रोक देते हैं और इन्सेक्ट की ग्रोथ को भी रोक देते हैं। जब आसपास के पौधे, यहां तक कि दूसरी प्रजाति के पौधे, सेजब्रश के नुकसान को भांप लेते हैं तो अपनी सुरक्षा की तैयारी कर लेते हैं।

एक-दूसरे से मुकाबला करते हैं पौधे

तुम्हें पता है! पौधे सूरज की रोशनी, अपनी पोजीशन के लिए आसपास के पौधों के साथ धक्कामुक्की भी करते हैं। यह बात अलग है कि ऐसा वे अपने तरीके से करते हैं। एक झगड़ालू प्लांट है नेपवीड। नेपवीड की जड़ें एक खास किस्म का केमिकल रिलीज करती हैं, जो उसे मिटटी से पोषक तत्व प्राप्त करने में मदद करता है। साथ ही वो केमिकल नेपवीड के आसपास की देसी घास को भी खत्म कर देता है। इस तरह नेपवीड अपने आसपास

की जगह हथिया लेता है। है न यह स्वार्थी और बदमाश पौधा! लेकिन कुछ प्लांट स्मार्ट भी होते हैं और इस केमिकल के खिलाफ सुरक्षा कवच बना लेते हैं। ल्यूपिन की जड़ें ऑक्जेलिक एसिड निकालती हैं, जो नेपवीड द्वारा रिलीज किए जाने वाले नुकसानदायक केमिकल के खिलाफ एक बैरिकेड बना देती है। यहां तक कि ल्यूपिन आसपास के पौधों की भी नेपवीड जैसे आक्रामक पौधों से रक्षा करता है।

अपने सहोदर को पहचानते हैं पौधे

जब किसी पौधे के पास दूसरा कोई पौधा या पौधे उग रहे होते हैं, तो वह उसे महसूस कर सकता है। जानवरों की तरह उनमें भी अपने सहोदर को पहचानने और मदद करने की प्रवृत्ति होती है। वे सूरज की रोशनी और दूसरी चीजों को हासिल करने में एक-दूसरे की मदद करते हैं और जब कोई दूसरा पौधा उनके ऊपर छाने लगता है, तो वे भी और बढ़ने लगते हैं। एक पौधा है ‘सी रॉकेट’। उसके साथ एक प्रयोग किया गया। जब उसे एक गमले में अपने ‘सिबिलिंग’ के साथ उगाया गया, तो उसकी जड़ें कम फैलीं। जब उसे ‘अपरिचित पौधों’ के साथ दूसरे गमले में बगايا गया, तो उसने अपनी जड़ें ज्यादा फैला लीं, ताकि वह मिटटी से अपने लिए पोषक तत्व ज्यादा ले सके, सूरज की रोशनी ज्यादा ले सके। यानी जब पौधे अपने सिबिलिंग के साथ उगते हैं, तो एक-दूसरे की जरूरतों का ज्यादा ध्यान रखते हैं। एक और एक्सपेरिमेंट से यह पता चला कि पौधे अपने सिबिलिंग को केमिकल सिग्नल के जरिये पहचानते हैं।

मैमल्स के साथ भी संपर्क करते हैं पौधे

पौधे केवल इन्सेक्ट को ही आकर्षित नहीं करते, चमगादड़ जैसे मैमल्स को संदेश भेज कर अपने पास बुला लेते हैं। एक मांसाहारी पिचर प्लांट है- नेपथेस हेमसलेना। उसके पास चमगादड़ (बैट) को आकर्षित करने का एक अनूठा सिस्टम है। इस प्लांट का आकार कटोरे या घड़े जैसा होता है। एक नई स्टडी के मुताबिक, इस प्लांट का स्ट्रक्चर ऐसा होता है कि उसके कारण चमगादड़ उसके पास खिंचे चले आते हैं और अपने मल-मूत्र के जरिये इस पिचर प्लांट को पोषक तत्व प्रदान करते हैं।

वृहस्पति का नया चंद्रमा!

दोस्तों, तुम्हें तो पता ही होगा कि वृहस्पति के पास सबसे अधिक उपग्रह हैं। अब ताजा खबर यह है कि वैज्ञानिकों ने इसका एक और नया उपग्रह खोज निकालने का दावा किया है। इसे वृहस्पति का 17वां उपग्रह माना जा रहा है। दरअसल, पिछले साल अरीजोना यूनिवर्सिटी और मैसाचुसेट्स के वैज्ञानिकों ने वृहस्पति के चारों ओर एक आकृति को चक्कर काटते देखा था। फिर स्पेसवाच कार्यक्रम के तहत धूमकेतुओं और क्षुद्रग्रहों को स्कैन कर दिया गया। जब उन्होंने इस नए उपग्रह को देखा तो उन्हें लगा कि यह या तो कोई क्षुद्रग्रह है या कोई धूमकेतु। (क्षुद्रग्रह बर्फ और धूप का छोटा सा हिस्सा होता है और सूर्य के चारों तरफ घूमता रहता है। जब यह सूर्य के पास पहुंचता है तो यह धूमकेतु वाष्पीकृत होकर सिर और पूंछ में तब्दील हो जाता है। सौर मंडल में क्षुद्रग्रह मंगल और वृहस्पति के बीच बड़े पैमाने पर पाए जाते हैं।)

वैज्ञानिकों ने इस बात पर विचार किया कि जो यह नई चीज दिखाई दे रही है, वह अगर क्षुद्रग्रह और धूमकेतु नहीं है तो आखिर क्या है? वैज्ञानिक इस बात को लेकर बड़ी उलझन में थे। वे सोच रहे थे कि हमने जो पिछले महीने ऑर्बिट में देखा था, वह आखिर क्या था? (सौर मंडल में ऑर्बिट एक ऐसा रास्ता है, जिसमें एक वस्तु दूसरी वस्तु के चारों ओर घूमती है। ऑर्बिट में हर चीज अपने आप में खास होती है।) वैज्ञानिकों ने पाया कि वृहस्पति ग्रह के चारों ओर घूमने वाला यह नया उपग्रह है, जो पहले नहीं देखा जा सका था। यही वजह है कि वैज्ञानिकों ने इस उपग्रह के लिए कोई खास नाम नहीं रखा है। फिलहाल इसे एस/1999 जे नाम से पुकारा जा रहा है। नए पाए गए उपग्रह का व्यास 5 किमी है। इसका मतलब यह है कि इस उपग्रह के एक छोर से दूसरे छोर तक पैदल चलने में केवल 5 किमी का सफर करना होगा। इस तरह देखा जाए तो यह वृहस्पति ग्रह का सबसे छोटा उपग्रह है। केवल वृहस्पति का ही नहीं, बल्कि इस सौर मंडल का यह सबसे छोटा उपग्रह होगा। इस उपग्रह के पाए जाने से पहले वृहस्पति का जो सबसे छोटा उपग्रह था, उसका नाम लेडा था। लेडा का व्यास 8 से 16 किमी तक था। अगर तुम ध्यान से देखोगे तो यह देखोगे कि इससे पहले भी वृहस्पति के उपग्रहों में हलचल दिखाई दी है। कुछ दिनों पहले वृहस्पति का सबसे बड़ा उपग्रह भी खोजा गया था। सबसे बड़े उपग्रह ने बहुत हलचल मचाई। यह

उपग्रह हमारे सौर मंडल में पाया जाने वाला अकेला उपग्रह है, जहां धरती की तुलना में ज्वालामुखी गुण कहीं ज्यादा पाए जाते हैं। हम सभी यह जानते हैं कि यह वृहस्पति का आखिरी उपग्रह नहीं है। यह उपग्रह अपने अंदर बहुत से रहस्य समेटे हुए हैं, जो वक्त के साथ खोजने पर सामने आएंगे।

हमारा चांद सबसे अनूठा

हमारे पास यानी पृथ्वी के पास एक ही चांद है, जिसे हम चंदा मामा कहते हैं। अपने सौरमंडल का सबसे चमकीला है अपना चंद्रमा। तुम्हें तो मालूम ही है कि हमारे और सूर्य के बीच में दो और ग्रह हैं। सूर्य के सबसे करीब बुध है और दूसरे स्थान पर शुक्र। हम तीसरे स्थान पर हैं। बुध और शुक्र के पास कोई चंद्रमा नहीं है, लेकिन हमारे पास एक चंद्रमा है। उस पर सूर्य की रोशनी पड़ती है और वह चमकता रहता है। तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि हम कभी भी पूरे चांद को नहीं देख पाते। हमेशा उसका एक ही हिस्सा हम देख पाते हैं। जानते हो ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि जितने समय में वह हमारी पृथ्वी का एक चक्कर लगाता है, उतने ही समय में अपनी धुरी पर भी एक चक्कर लगा लेता है। इस कारण हमें उसका एक ही हिस्सा दिखता है और दूसरा हिस्सा हमेशा अंधेरे में रहता है। चांद को पृथ्वी का एक चक्कर लगाने में लगभग 27 दिन 7 घंटे और 43 मिनट का समय लग जाता

है। यह हमारी पृथ्वी से काफी करीब भी है। पृथ्वी से इसकी औसत दूरी लगभग 3 लाख 84 हजार 400 किलोमीटर है। यानी पृथ्वी से चंद्रमा की दूरी कभी कम और कभी अधिक हो जाती है। जब चंद्रमा पृथ्वी से दूर होता है, उस समय यह दूरी लगभग 4 लाख 5 हजार 500 किलोमीटर होती है और जब चंद्रमा पृथ्वी के करीब आ जाता है तो दोनों के बीच की दूरी 3 लाख 56 हजार 300 किलोमीटर हो जाती है। शायद तुम्हें यह मालूम नहीं होगा कि समुद्र में बड़ी-बड़ी लहरें कब और क्यों उठती हैं। यह अपने चंद्रमा के कारण ही होता है। जब चंद्रमा और पृथ्वी के बीच की दूरी कम होती है तो समुद्र में ऐसी लहरें उठती हैं। इसका कारण है चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल। वैसे तो यह बल पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल के छठे हिस्से के बराबर है, लेकिन समुद्र के पानी पर उसका असर हो ही जाता है। अगर तुम वहां जाना चाहो तो रॉकेट से सिर्फ 13 घंटे में पहुंच सकते हैं। प्रकाश को तो इतनी दूरी तय करने में दो सेकेंड भी नहीं लगते हैं। चंद्रमा का व्यास 3476 किलोमीटर है। अगर तुम ऐसे चार चंद्रमाओं को मिला दोगे तो जितना बड़ा चंद्रमा बनेगा, उतनी ही बड़ी है हमारी पृथ्वी। यानी हमारी पृथ्वी का लगभग एक चौथाई आकार है चंद्रमा का। यहां न तो हवा है और न ही मौसम। वैज्ञानिकों ने यह भी पता लगा लिया है कि पृथ्वी की एक बड़ी टक्कर से चंद्रमा बना। यह टक्कर आज से लगभग 4.5 अरब वर्ष पहले हुई थी।

महाराष्ट्र में रैपिडो चला रहा था जैश का सदिग्ध आतंकी, एटीएस ने दबोचा

मुंबई। महाराष्ट्र आतंकवाद निरोधक दस्ते (एटीएस) ने प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े एक 33 वर्षीय सदिग्ध आतंकी मोहम्मद हसन अबु सरमद अख्तर को मुंबई से गिरफ्तार किया है। एटीएस को गुप्त सूचना मिली थी, जिसके आधार पर आरोपी को माहिम मेट्रो स्टेशन के पास से पकड़ा गया। एटीएस के अनुसार, शुरुआती जांच में सामने आया है कि मोहम्मद हसन रैपिडो राइडर और इत्र विक्रेता के तौर पर काम करने की आड़ में कथित तौर पर कट्टरपंथी विचारों का प्रचार कर रहा था। जानकारी के अनुसार, एटीएस ने सदिग्ध को हिरासत में लेकर मुंबई पुलिस के हवाले किया था, जिसके बाद मुंबई पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस के मुताबिक, माहिम पुलिस थाने में सदिग्ध के खिलाफ प्राथमिकी (एफआईआर) दर्ज की गई है। आरोपी के पाकिस्तान के एक खुफिया अधिकारी (पीआईओ) के संपर्क में होने का भी आरोप है। जांच के दौरान पुलिस ने आरोपी के पास से एक मोबाइल फोन और लैपटॉप बरामद किए हैं। इन इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की गहन जांच की जा रही है ताकि सदिग्ध के संपर्कों और गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी जुटाई जा सके। महाराष्ट्र एटीएस और मुंबई पुलिस संयुक्त रूप से आरोपी की गतिविधियों और जैश-ए-मोहम्मद से उसके कथित संबंधों का पता लगाने का प्रयास कर रही है। यह गिरफ्तारी भारत में जैश-ए-मोहम्मद के बढ़ते नेटवर्क और उसके मॉड्यूल के सक्रिय होने का संकेत देती है। इससे पहले भी देश के विभिन्न हिस्सों से जैश से जुड़े सदिग्धों की गिरफ्तारी हुई है। जुलाई में गुजरात एटीएस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए पाकिस्तान स्थित जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े 8 लोगों को गुजरात और मध्य प्रदेश के विभिन्न जिलों से गिरफ्तार किया था। गुजरात एटीएस ने बताया था कि ये आरोपी भी पाकिस्तानी हैंडलर्स के संपर्क में थे और गुजरात में जैश का नेटवर्क स्थापित करने, आतंकी गतिविधियों को बढ़ावा देने तथा जैश की विचारधारा का गुजराती में अनुवाद व प्रसार करने का काम कर रहे थे। उस जांच में पाकिस्तान स्थित आतंकी संगठन से फंडिंग का भी खुलासा हुआ था।

दिल्ली के स्कूल में 12वीं की छात्रा का जला हुआ शव मिला, बैग से तीन लेटर बरामद



नई दिल्ली। दिल्ली के कृष्णा नगर स्थित सर्वोदय बालिका विद्यालय में शनिवार दोपहर 12वीं कक्षा की 18 वर्षीय छात्रा का जला हुआ शव मिलने से हड़कंप मच गया। सूचना मिलने पर पुलिस और दमकल विभाग की टीम मौके पर पहुंची। छात्रा का शव स्कूल परिसर में गार्ड रूम के पीछे मिला। घटनास्थल के पास उसका स्कूल बैग भी बरामद हुआ, जिसमें से तीन लेटर मिले हैं। पुलिस मामले को आत्महत्या से जोड़कर जांच कर रही है। पुलिस के मुताबिक, स्कूल में आग लगने की सूचना पीसीआर कॉल के जरिए मिली थी। इसके बाद पुलिस और दमकलकर्मी मौके पर पहुंचे। जांच के दौरान छात्रा जली हुई हालत में मिली। प्रारंभिक जांच में आशंका जाहिर की गई है कि छात्रा ने खुद पर पेट्रोल डालकर आग लगाई थी। हालांकि, घटना के वास्तविक कारणों की पुष्टि जांच पूरी होने के बाद ही हो सकेगी। पुलिस को छात्रा के बैग से मिले तीन लेटर की जांच से मामले से जुड़े अहम तथ्य सामने आने की उम्मीद है। प्रारंभिक जांच में प्रेम प्रसंग से जुड़ा पहलू भी सामने आया है, लेकिन अधिकारियों ने संबंध में विस्तृत जानकारी साझा नहीं की है। घटनास्थल से साक्ष्य जुटाने के लिए फाइंड टीमा को बुलाया गया। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और सभी पहलुओं को ध्यान में रखकर पड़ताल की जा रही है।

फारूख अब्दुल्ला बोले- हमारी रक्षा कर रहा पाकिस्तान

-बारामूला की रैली में केंद्र पर साधा निशाना, अनुच्छेद 370 बहाली तक संघर्ष रहेगा जारी

बारामूला, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री और नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष डॉ. फारूख अब्दुल्ला ने शनिवार को बारामूला में पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए केंद्र सरकार और दिल्ली के इरादों पर सवाल उठाए। उन्होंने पाकिस्तान को लेकर भी बयान दिया, जिसमें कहा कि पाकिस्तान कश्मीर का मुद्दा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उठा रहा है और वह उनकी रक्षा कर रहा है।

रैली में पूर्व सीएम फारूख अब्दुल्ला ने कहा, आप दिल्ली से क्या उम्मीद कर सकते हैं? क्या आपको लगता है कि वे आपको न्याय दिलाएंगे? उन्होंने कार्यकर्ताओं से संघर्ष जारी रखने का आह्वान करते हुए कहा कि उन्हें लड़ने का साहस रखना होगा, अन्यथा उनकी पहचान मिट सकती है। उन्होंने आगे कहा कि भारत आज दुनिया के दबाव के कारण चुप है और पड़ोसी देश लगातार कश्मीर के मुद्दे को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर उठा रहा है। अब्दुल्ला के मुताबिक, पाकिस्तान विभिन्न मंचों पर यह कहता है कि कश्मीर का मुद्दा अब तक हल नहीं



हुआ है। उन्होंने इसी संदर्भ में कहा कि पाकिस्तान उनकी रक्षा कर रहा है, जबकि दिल्ली के इरादे अच्छे नहीं हैं।

370 बहाली के लिए संकल्प

फारूख अब्दुल्ला ने जम्मू-कश्मीर के विशेष दर्जे का मुद्दा भी उठाया। उन्होंने कहा कि उनकी पार्टी अनुच्छेद 370 की बहाली के लिए संघर्ष जारी रखेगी और भरोसा जताया कि एक दिन प्रदेश को उसका विशेष दर्जा वापस मिलेगा। गौरतलब है कि केंद्र सरकार ने 5 अगस्त 2019 को जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 के अधिकांश

में घोषणाएं कर रहे थे, जिसमें दावा किया गया था कि पंडाल गिर रहा है और आगंतुकों को तुरंत वहां से निकलने को कहा जा रहा था। ऐसा लगता है कि इन घोषणाओं से दहशत फैल गई, जिससे लोग बाहर निकलने के लिए तेजी से भागे और भगदड़ मच गई। राहा के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की गैर-जमानती धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है और उसे अदालत में पेश किया जाएगा। पुलिस उन घटनाओं की कड़ियां जोड़ रही है जिनके कारण भगदड़ मची। मुख्यमंत्री ने बताया कि भगदड़ मुख्य रूप से मानवीय चूक के कारण हुई थी। उन्होंने एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश को जांच की जिम्मेदारी सौंपी है, जो पुलिस की सहायता से तीन महीने के भीतर अपनी रिपोर्ट सौंपे। राज्य सरकार जांच के आधार पर की गई सिफारिशों

को लागू करेगी और निष्कर्षों को सार्वजनिक करेगी। अधिकारी ने कहा, जो भी सिफारिशें करेगी, विधानसभा के सामने रखेगी, संवाददाताओं को उपलब्ध कराएंगी और इसे सार्वजनिक रूप से भी जारी करेगी। उन्होंने शोकसंतप्त परिवारों के प्रति एकजुटता व्यक्त करते हुए कहा कि इन परिवारों के साथ खड़ा होना उनकी जिम्मेदारी है। उन्होंने निजी एजेंसियों और राजनीतिक संगठनों को भी धन्यवाद दिया जिन्होंने इन परिवारों का साथ दिया है। इस बीच, भगदड़ फैलाने के आरोप में अब तक नौ लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। शुक्रवार को दो और गिरफ्तारियां की गईं, जिनमें संजीव राहा और कुशल मजूमदार शामिल हैं। पुलिस के अनुसार, संजीव राहा,

सीएम रेखा ने अधिकारियों से कहा- छठ पर्व में साफ-सफाई और उचित रोशनी सुनिश्चित करें

नई दिल्ली, एजेंसी। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने शनिवार को शालीमार बाग इलाके में मुनक नहर पर छठ घाट की तैयारियों का जायजा लिया है। सीएम ने अधिकारियों को क्षेत्र में व्यवस्थित ढंग से कार्य सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने इस दौरान विभिन्न कार्यों की प्रगति की समीक्षा की और अधिकारियों को ल्योहार के दौरान उचित रोशनी तथा साफ-सफाई पर विशेष ध्यान देने को कहा। सीएम रेखा गुप्ता ने कहा, दिल्ली सरकार का लक्ष्य छठ से पहले घाटों का निर्माण और उनसे जुड़े विकास कार्य पूरे करना है, ताकि श्रद्धालु स्वच्छ वातावरण में पूरी श्रद्धा और भक्ति के साथ पूजा-अर्चना कर सकें। सीएम ने हरित क्षेत्रों के विकास और पौधारोपण कार्यों की भी समीक्षा की। उन्होंने कहा, अधिकारियों को निर्देश दिया कि सुनिश्चित योजना के बिना पौधारोपण नहीं किया जाए। इसके बजाय, क्षेत्र के समग्र स्वरूप और उपलब्ध जगह को ध्यान में रखते हुए व्यवस्थित ढंग से कार्य किया जाए।

स्ट्रांगलीडर की छवि के लिए छात्रों को निशाना बना रही सरकार: दीपके

नई दिल्ली, एजेंसी। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संयोजक अभिजीत दीपके ने अमेरिकी नागरिक मैथ्यू वैन डाइक की दोबारा रिहाई को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर तीखा निशाना साधा है। दीपके ने तंज कसा कि आतंकियों को प्रशिक्षण देने वाले को रिहा कर दिया गया, जबकि देश का तिरंगा लहराने वालों को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा माना जाता है। उन्होंने आरोप लगाया कि पीएम मोदी स्ट्रांग लीडर वाली अपनी छवि को बरकरार रखने के लिए छात्रों और प्रदर्शनकारियों को निशाना बना रहे हैं।

दीपके ने सोशल मीडिया पर एक वीडियो जारी कर सवाल उठाया कि भारतीय सुरक्षा एजेंसियों ने वैन डाइक को रिहाई पर कोई आपत्ति क्यों नहीं जताई। उन्होंने व्यांग्यात्मक लहजे में कहा, वह म्यांमार में सिर्फ आतंकियों को ही तो ट्रेनिंग दे रहा था। ऐसा तो नहीं है कि वह हमारे देश का तिरंगा लहराना चाहता था। अगर वह हमारे देश में तिरंगा लहराता, तो बड़ा नेशनल



सिक्वोरिटी थ्रेट हो सकता था। दीपके का यह तंज उनके अपने लहरा दो तिरंगा प्रदर्शन से जुड़ा था, जिसके लिए सीजेपी दावा करती है कि उनके कार्यकर्ताओं को तिरंगा लहराने के लिए जेल भेजा गया था। हालांकि, सरकार का दावा है कि उन्हें तिरंगा लहराने के लिए नहीं बल्कि शांति भंग करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। दीपके ने भारत-चीन सीमा

पर कमजोर होती सुरक्षा व्यवस्था पर भी चिंता जताई और इसके लिए केंद्र सरकार को जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार ने सुरक्षाबलों को सीमा से हटाकर दिल्ली में हो रहे विरोध प्रदर्शनों को रोकने में लगाया है। दीपके ने कहा कि सरकार की प्राथमिकता इस समय वैन डाइक मामले या सीमा सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण मामलों को गंभीरता से लेना नहीं, बल्कि दिल्ली में होने वाले आम विरोध प्रदर्शनों को नियंत्रित करना है। पीएम मोदी पर सीधा हमला बोलते हुए दीपके ने कहा कि अमेरिका और पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के सामने अपनी सख्त छवि न दिखा पाने के कारण प्रधानमंत्री देश के छात्रों को पीटकर, घसीटकर और हिरासत में लेकर एक मजबूत नेता की छवि पेश कर रहे हैं। दीपके ने कहा, स्ट्रांग लीडर वाला फील लेने के लिए कुछ तो करना पड़ेगा न। तो पीटेंगे स्ट्रैंट्स को सड़कों पर, घसीटेंगे, डिटेल करेंगे, गिरफ्तार करेंगे तिरंगा लहराने के लिए।

सपा प्रत्याशी आकाश अग्रवाल के आरोप, ऐसा बर्ताव हुआ जैसे पाकिस्तान से आया हूं

आगरा, एजेंसी। आगरा खंड शिक्षक एमएलसी चुनाव संपन्न होने के बाद भी राजनीतिक विवाद थकता नहीं दिख रहा है। समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी डॉ. आकाश अग्रवाल ने चुनाव के दौरान पुलिस और जिला प्रशासन पर गंभीर आरोप लगा दिए हैं। उन्होंने दावा किया कि चुनाव प्रक्रिया के दौरान उन्हें और उनके समर्थकों को परेशान किया गया। उन्होंने अपनी स्थिति की तुलना कर कहा कि उन्हें ऐसा महसूस कराना गया, जैसे वह पाकिस्तान से आए कोई आतंकवादी हों। आकाश के इन बयानों से राजनीतिक हलकों में चर्चा तेज हो गई है। आकाश अग्रवाल ने आरोप लगाया कि चुनाव के दौरान 12 जिलों में शिक्षक साथियों और स्कूल प्रबंधकों को परेशानियों का सामना करना पड़ा। उन्होंने बृथ कैप्चरिंग का आरोप लगाया, हालांकि इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है। सपा प्रत्याशी ने कहा कि यदि उन्हें पहले पता होता कि चुनाव लड़ने के कारण उनके सहयोगियों को इतनी परेशानी झेलनी पड़ेगी, तब वह चुनाव मैदान में नहीं उतरते। आकाश ने अपनी नाराजगी जाहिर कर आशंका जता दी कि उनके खिलाफ झूठे मामले बनाए जा सकते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसी परिस्थितियों में उन्हें डर महसूस होने लगा है। इसी बातचीत के दौरान उन्होंने धर्म परिवर्तन करने की बात भी कही। हालांकि, उन्होंने इस संबंध में कोई विस्तृत योजना सार्वजनिक नहीं की। डॉ.अग्रवाल वर्ष 2020 में भी आगरा खंड शिक्षक एमएलसी सीट से चुनाव लड़ चुके हैं। तब उन्होंने निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में जीत दर्ज की थी। चुनाव में उन्हें 6,690 वोट मिले थे, जबकि भाजपा के दिनेश चंद्र वशिष्ठ को 4,314 वोट प्राप्त हुए थे। इस तरह आकाश अग्रवाल ने 2,376 मतों के अंतर से जीत हासिल की थी। वर्ष 2026 के चुनाव में आकाश अग्रवाल भाजपा से टिकट मिलने की उम्मीद कर रहे थे, लेकिन टिकट नहीं मिलने के बाद वे समाजवादी पार्टी में शामिल हो गए। सपा ने उन्हें आगरा खंड शिक्षक एमएलसी सीट से अपना उम्मीदवार बनाया। अब चुनाव के बाद उनके आरोपों ने राजनीतिक माहौल को फिर गरमा दिया है। हालांकि, पुलिस और प्रशासन का पक्ष सामने आने के बाद ही इन आरोपों की स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

कोलकाता भगदड़ की जांच: पंडाल गिरने की घोषणा से मची थी भगदड़

कोलकाता, एजेंसी। चोरबागान में एक पूजा पंडाल में मची दुखद भगदड़ को मानवीय भूल का परिणाम बताते हुए मुख्यमंत्री शुभेंद्रु अधिकारी ने हादसे में 19 लोगों की मौत पर गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने आश्वासन दिया कि जांच के बाद आने वाली सभी सिफारिशों को पूरी तरह से लागू किया जाएगा। अधिकारी ने मानिकतला के बागमारी निवासी शुभम सोनकर और श्यामपुकुर निवासी मिर्झ मंडल सहित दो पीड़ितों के आवासों का दौरा करने के बाद ये टिप्पणियां कीं। उन्होंने शोकसंतप्त परिवारों से मुलाकात की और उन्हें हरसंभव सहायता का आश्वासन दिया। अधिकारियों ने बताया कि इन दोनों को सीसीटीवी फुटेज की जांच के दौरान पहचाना गया। वे दुर्गा पूजा के पहले दिन शाम को पंडाल

में घोषणाएं कर रहे थे, जिसमें दावा किया गया था कि पंडाल गिर रहा है और आगंतुकों को तुरंत वहां से निकलने को कहा जा रहा था। ऐसा लगता है कि इन घोषणाओं से दहशत फैल गई, जिससे लोग बाहर निकलने के लिए तेजी से भागे और भगदड़ मच गई। राहा के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की गैर-जमानती धाराओं के तहत मामला दर्ज किया गया है और उसे अदालत में पेश किया जाएगा। पुलिस उन घटनाओं की कड़ियां जोड़ रही है जिनके कारण भगदड़ मची। मुख्यमंत्री ने बताया कि भगदड़ मुख्य रूप से मानवीय चूक के कारण हुई थी। उन्होंने एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश को जांच की जिम्मेदारी सौंपी है, जो पुलिस की सहायता से तीन महीने के भीतर अपनी रिपोर्ट सौंपे। राज्य सरकार जांच के आधार पर की गई सिफारिशों

को लागू करेगी और निष्कर्षों को सार्वजनिक करेगी। अधिकारी ने कहा, जो भी सिफारिशें करेगी, विधानसभा के सामने रखेगी, संवाददाताओं को उपलब्ध कराएंगी और इसे सार्वजनिक रूप से भी जारी करेगी। उन्होंने शोकसंतप्त परिवारों के प्रति एकजुटता व्यक्त करते हुए कहा कि इन परिवारों के साथ खड़ा होना उनकी जिम्मेदारी है। उन्होंने निजी एजेंसियों और राजनीतिक संगठनों को भी धन्यवाद दिया जिन्होंने इन परिवारों का साथ दिया है। इस बीच, भगदड़ फैलाने के आरोप में अब तक नौ लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। शुक्रवार को दो और गिरफ्तारियां की गईं, जिनमें संजीव राहा और कुशल मजूमदार शामिल हैं। पुलिस के अनुसार, संजीव राहा,



जो चोरबागान दुर्गा पूजा समिति का कोषाध्यक्ष भी था, को गुरुवार को नादिया जिले से हिरासत में लिया गया था, जबकि कुशल मजूमदार को शुक्रवार को गिरौश पार्क इलाके से गिरफ्तार

किया गया। दोनों आरोपी कोलकाता की अमर बसु सरणी के निवासी हैं और उनका घर पूजा स्थल से महज 50 मीटर दूर है।

सहारनपुर में डॉ. अंबेडकर की प्रतिमा क्षतिग्रस्त, ग्रामीणों में आक्रोश, आरोपियों की तलाश में जुटी पुलिस

सहारनपुर, एजेंसी। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर जिले के ग्राम लखनौती में डॉ.भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा क्षतिग्रस्त करने का मामला सामने आया है। अंबेडकर पार्क में मौजूद प्रतिमा टूटी हुई और एक तरफ गिरी मिलने से ग्रामीणों में नाराजगी है। घटना की जानकारी मिलते ही बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर एकत्र हो गए और पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर मामले की जांच शुरू कर दी है। ग्रामीणों के मुताबिक, गांव में अंबेडकर पार्क के लिए जगह आवंटित की गई है, जहां बाबा साहब की प्रतिमा स्थापित थी। आरोप है कि अज्ञात शरारती तत्वों ने प्रतिमा को क्षतिग्रस्त कर दिया। घटना की जानकारी सामने आने के बाद ग्रामीणों ने इसकी कड़ी निंदा की और दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की। ग्रामीणों ने प्रशासन से मांग की है कि पार्क में जल्द से जल्द नई प्रतिमा स्थापित कराएं। इसके साथ ही पार्क की चारदीवारी कराने की मांग उठी है, ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाओं को रोका जा सके। ग्रामीणों ने मामले में जल्द कार्रवाई करने और प्रतिमा की सुरक्षा सुनिश्चित करने की अपील की है। पुलिस ने बताया कि डायल 112 के माध्यम से ग्राम लखनौती में डॉ.अंबेडकर की प्रतिमा क्षतिग्रस्त होने की सूचना मिली थी। इसके बाद वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज कर लिया है। आरोपियों की पहचान और गिरफ्तारी के लिए तीन पुलिस टीमों का गठन किया गया है। फिलहाल गांव में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस बल तैनात किया गया है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच जारी है और दोषियों के खिलाफ नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

थलापति सरकार के फैसले से खुश हुई मोदी सरकार हवाई यात्रियों को राहत मिलने की उम्मीद



करना विमानन क्षेत्र के लिए स्वागतयोग्य कदम है। उन्होंने केंद्र और राज्यों के बीच सहयोग की जरूरत पर जोर देकर कहा कि हवाई यात्रा को सस्ता बनाने के प्रयासों में यात्रियों के हितों को प्राथमिकता दें।

थलापति सरकार के फैसले के तहत चेन्नई में एटीएफ पर वेट 29 से घटाकर 16 प्रतिशत कर दिया है। वहीं, राज्य के अन्य हवाई अड्डों पर इस घटाकर एक प्रतिशत करने का प्रावधान किया है। विमान ईंधन की कीमतें एयरलाइंस की

परिचालन लागत का महत्वपूर्ण हिस्सा होती हैं। इसके बाद कर में कटौती से विमानन कंपनियों को कुछ राहत मिलने की उम्मीद है। हालांकि, इसका असर हवाई टिकटों की कीमतों पर कितना पड़ेगा, यह कंपनियों के खर्च और बाजार की परिस्थितियों पर निर्भर करेगा। यह फैसला तब सामने आया है, जब वैश्विक विमानन क्षेत्र ईंधन की बढ़ती कीमतों और भू-राजनीतिक तनाव के कारण दबाव का सामना कर रहा है। पश्चिम एशिया में जारी तनाव से तेल बाजार और अंतरराष्ट्रीय उड़ानों के संचालन पर असर पड़ने की आशंका बनी हुई है। कई मार्गों पर हवाई क्षेत्र संबंधी प्रतिबंधों और उड़ानों के मार्ग बदलने से भी विमानन कंपनियों की लागत बढ़ सकती है।

रेहानवाड़ा की तस्वीरें हटाने पर प्रियंका चतुर्वेदी, कलाकारों की अभिव्यक्ति का किया समर्थन



नई दिल्ली, एजेंसी। नई दिल्ली के बीकानेर हाउस में आयोजित प्रदर्शनी से प्रियंका गांधी वाड़ा के पुत्र रेहान वाड़ा की कुछ तस्वीरें हटाने का मामला चर्चा में है। इस विवाद के बीच शिवसेना (यूबीटी) की नेता और पूर्व राज्यसभा सांसद प्रियंका चतुर्वेदी प्रदर्शनी देखने पहुंचीं। उन्होंने तस्वीरें हटाने के फैसले पर निराशा जताकर युवा कलाकारों और फोटोग्राफरों की अभिव्यक्ति को समर्थन देने की जरूरत जाहिर की। शिवसेना यूबीटी नेता प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि वे प्रदर्शनी में शामिल सभी कलाकारों के समर्थन के लिए आई हैं। उन्होंने कहा कि कलाकार और फोटोग्राफर अपनी कला, तस्वीरों और रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से समाज में हो रही घटनाओं को सामने लाते हैं। उनके काम को प्रोत्साहित करना और उन्हें अपनी बात रखने के लिए उचित मंच उपलब्ध कराना जरूरी है। रेहान वाड़ा की कुछ तस्वीरों को हटाने के फैसले पर प्रियंका चतुर्वेदी ने युवा कलाकारों की रचनात्मक स्वतंत्रता और उनके काम को उचित स्थान देने पर जोर दिया। उन्होंने रेहान वाड़ा के भविष्य को लेकर भी सकारात्मक टिप्पणी की और उनके कलात्मक प्रयासों के प्रति समर्थन जताया। इस मामले ने तस्वीरें हटाने के बाद राजनीतिक और सार्वजनिक हलकों में चर्चा को जन्म दिया है। शिवसेना यूबीटी नेता प्रियंका चतुर्वेदी का प्रदर्शनी में पहुंचना कलाकारों और फोटोग्राफरों के काम के समर्थन के रूप में देखा जा रहा है। उनके बयान ने कला के क्षेत्र में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के मुद्दे को फिर चर्चा में ला दिया है।

मध्य प्रदेश में जहरीली शराब का कहर, तीन महीने में तीसरी घटना

देवास में जहरीली शराब से 20 मौतें

भोपाल, एजेंसी। मध्य प्रदेश में जहरीली और मिलावटी शराब का कारोबार एक बार फिर गंभीर चिंता का विषय बन गया है। पिछले तीन महीने में जहरीली शराब से मौतों की तीसरी घटना सामने आने के दावे ने शराब माफिया पर नियंत्रण और सरकारी निगरानी व्यवस्था पर सवाल खड़े कर दिए हैं। देवास जिले में जहरीली शराब से 20 लोगों की मौत होने की खबर ने पूरे प्रदेश में चिंता बढ़ा दी है।



हर घटना के बाद सरकार की ओर से जांच, छापेमारी और दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की बात कही जाती है। इसके बावजूद यदि जहरीली शराब के कारण बार-बार लोगों की जान जा रही है, तो यह सवाल उठाना स्वाभाविक है, अवैध शराब के निर्माण, भंडारण और बिक्री पर प्रभावी रोक क्यों नहीं लग पा रही है। जहरीली शराब का कारोबार केवल कानून-

व्यवस्था का मामला नहीं, बल्कि जनस्वास्थ्य से जुड़ा गंभीर संकट है। अवैध शराब में मिलाए जाने वाले जहरीले रसायन कुछ ही समय में लोगों की जान ले लेते हैं। इसका सबसे अधिक खामियाजा आर्थिक रूप से कमजोर तबकों को भुगतना पड़ता है। लगातार सामने आ रही ऐसी घटनाओं के बीच सरकार और आबकारी

विभाग की जवाबदेही तय करने की मांग उठने लगी है। जरूरत केवल घटना के बाद आरोपियों की गिरफ्तारी तक सीमित रहने की नहीं, बल्कि अवैध शराब की आपूर्ति शृंखला तोड़ने, नियमित निगरानी, दोषियों को सजा दिलाने और जिम्मेदार अधिकारियों की भूमिका की जांच करने की है। सवाल यह है, हर हादसे के बाद कार्रवाई का भरोसा देने के बजाय ऐसी व्यवस्था कब बनेगी,जिससे जहरीली शराब के कारण होने वाली मौतों को रोका जा सके?